B.A. Part I
Hindi Hons
Paper I
मध्यकालीन (हिन्दी) काव्य
सूरदास

18/6/21

डॉ० अनुपमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन० सिन्हा कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न :– सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालें।

उत्तर – महाकवि सूरदास की लेखनी का अधिकार शृंगार के समान ही वात्सल्य पर भी समान रूप से है। बाल मनोविज्ञान का जैसा आनन्ददायक और मनोमुग्धकारी वर्णन सूर ने अपनी बन्द आँखों से किया है उतना आँख वाले भी नहीं कर सके हैं। समालोचक सूर-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तो इनके वात्सल्य वर्णन पर मुग्ध होकर यहाँ तक लिख दिया है कि – "जितने विस्तृत और विशद रूप में बाल लीला का चित्रण इन्होंने किया है, उतने विस्तृत रूप में और किसी कवि ने नहीं किया।"

रूप चित्रण के दो भाग होते हैं – स्थिर और गत्यात्मक। जहाँ कृष्ण के मुख, आँखें, लट तथा दाँत इत्यादि का वर्णन है वहाँ रूप का स्थिर चित्रण है पर जहाँ कृष्ण के चलते, खेलते, दौड़ते इत्यादि अवस्था का चित्रण है वहाँ रूप का गत्यात्मक चित्रण है। 'देखो री सुन्दरता के सागर' पद में स्थिर रूप चित्रण को देखा जा सकता है तथा 'जसोदा हरि पालने झुलावै', 'सिखवत चलन जसोदा मैया' आदि पदों में गत्यात्मक चित्रण के उदाहरण को देखा जा सकता है।

सूर ने रूप चित्रण को ही केवल अपनी लेखनी का आधार नहीं बनाया बल्कि बालकों के अन्तः उदर में प्रवेश कर उनकी प्रत्येक प्रवृत्तियों का भी सूक्ष्मता से अवलोकन किया। बालकों में हठ की प्रवृत्ति होती है। सूर के कृष्ण भी हठी हैं। वे तो चाँद के लिए मचलते हैं तो फिर मानने का नाम नहीं लेते। यशोदा मनाती है पर वे [illegible] शब्दों में कह देते हैं —

[illegible] : —